दृष्टि

साहित्य, कला, मनोरंजन

हिंदी - क्लब ऑफ इलिनॉय की मासिक पत्रिका | प्रथम वर्ष | अंक २ | फ़रवरी २०२२

कहानी -डुम्बा चौरा

लघु कथा - गुरु ज्ञान

यात्रा वृत्तान्त

दृष्टि

हिंदी - क्लब ऑफ इलिनॉय की मासिक पत्रिका
अंक २ | फ़रवरी २०२२

हिंदी क्लब टीम

गुरबचन कौर "नीलम" (संस्थापिका/अध्यक्ष)
उषा कमारिया (सह - संस्थापिका)
विजय चोपड़ा (सचिव)
मीता सेवकरमानी, ESQ (कानूनी सलाहकार)

संपादक

मनीष श्रीवास्तव

संपादकीय सहयोग

कमलेश भारतीय
डा. निशा पांड्या

सलाहकार समिति

श्री वीरेंद्र कुमार यादव, पटना (अंतरराष्ट्रीय हिंदी परिषद्, भारत)
डा. संजीव कुमार, नई दिल्ली (इंडिया नेट बुक्स प्रा. लि.)
श्री केशव राय, मुंबई (विश्व हिंदी अकादमी)
शैलेन्द्र गर्ग (लेखक, सदस्य हिंदी क्लब ऑफ़ इलिनॉय)
डा. दीपक पाण्डे, नई दिल्ली (सहायक निदेशक, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

प्रतिनिधि मंडल

डा. प्रतिभा फडके, ओहायो प्रतिनिधि
शिखा मेहता, इलिनॉय प्रतिनिधि

आवरण चित्र

रुचिका यादव, मेसाच्युसेट्स

हिंदी क्लब ऑफ़ इलिनॉय

2545 W Devon Ave, Chicago, Illinois
60659 USA
www.hindiclub.org
email - drishti@hindiclub.org

डिजाईन एवं मल्टीमिडिया
पश्चिम मीडिया एंड पब्लिकेशन्स
www.thepashchim.com
info@thepashchim.com

इस अंक में

१.परिचय

सम्पादकीय		मनीष श्रीवास्तव	१
अध्यक्ष की कलम से		गुरबचन कौर नीलम	२

२. साहित्य

धरोहर	कविता (वीणा वादिनी)	सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"	३
कविताएँ		सौरभ सिंह	४
कविताएँ	आसान, तमाशा, यथार्थ	हरदीप सबरवाल	५
कविता	वेगास का सूरज	संगीता वाजपई	६
कविता	हम मुस्कुराए जा रहे हैं	शुभ्रा ओझा	७
विशेष	क़तर में हिंदी का प्रसार	मोनी श्रीवास्तव कोइराला	८
लघु कथा	प्यारा घर	प्रो. नव संगीत सिंह	११
लघु कथा	गुरु ज्ञान	नेत लाल यादव	१२
यात्रा वृत्तान्त	पाटण, गुजरात	ऋषिकेश मीना	१४
अंग्रेज़ी कहानी	डुम्बा चौरा (अनुवाद - मनीष श्रीवास्तव)	चंद्रेयी लाहिड़ी	१९
आलेख	चलो हम हिंदी अपनाएं	प्रीती मिश्रा	२५
बाल कविताएं	मैं नन्हा मुन्ना बच्चा हूँ , फ़ोन करो माँ, बर्फ़ गिरी है	प्रमिला भार्गव	२७
खेल खेल में	शब्दावली , बूझो तो जानें		२८

२. कला

आवरण		रुचिका यादव	२९

३. मनोरंजन

क्या देखें		मनीष श्रीवास्तव	३०

४. अंततः

आरोग्यम		डा. प्रतिभा फड़के गुप्ता	३१
गतिविधियाँ		शिखा मेहता	३३
शुभकामनायें			३५-३६

सम्पादकीय

सबसे पहले आप सभी पाठकों का मैं नतमस्तक होकर धन्यवाद देना चाहता हूँ,"दृष्टि " के प्रवेशांक के "फ्लिप बुक वर्ज़न" को लगभग ४०० हिट्स मिले। हमारा मुख्य प्रयास रहेगा कि हम पत्रिका के स्तर को हर अंक के साथ ऊपर उठायें, हमें आपके सुझाव भी मिले और इन सुझावों पर हम मार्च के अंक से अमल करना भी शुरू कर देंगे। एक भाषाई पत्रिका को किसी गैर लाभित संस्था द्वारा अमेरिका से नियमित हर माह संचालित करना बहुत ही चुनौती पूर्ण है, इसके लिए एक समर्पित टीम की आवश्यकता होती है। हमारी टीम के इरादे मज़बूत हैं और हमें पूरा विश्वास है कि हम इस पत्रिका के माध्यम से विदेश में हिंदी को एक नया आयाम प्रदान करेंगे।

फ़रवरी का महीना अमेरिका में "ब्लैक हिस्ट्री मंथ" यानी अश्वेतों के इतिहास के माह के रूप में मनाया जाता है इसका मुख्य उद्देश्य अमेरिकी इतिहास में अश्वेतों के योगदान को याद करना है। "इसे अफ़्रीकन अमेरिकन हिस्ट्री मंथ" भी कहा जाता है। सन १९१५ में इसकी शुरुआत का सारा श्रेय प्रसिद्ध इतिहासकार कार्टर जी वुड्सन को जाता है । अमेरिका की तर्ज़ पर कनाडा और यूनाइटेड किंगडम ने भी साल का एक महीना अश्वेतों के इतिहास को समर्पित किया हुआ है । १९७६ से लेकर अभी तक प्रत्येक अमेरिकी राष्ट्रपति ने फ़रवरी को अश्वेत इतिहास के माह के रूप में में घोषित किया। इस वर्ष का विषय "ब्लैक हेल्थ एंड वेलनेस है", पिछले कुछ वर्षों में हुई घटनाओं के कारण इसकी प्रासंगिकता और भी अधिक हो गई है ।

कोरोना का प्रकोप अभी भी जारी है जिसका फ़िलहाल मुख्य कारण ओमीक्रॉन वैरिएंट बना हुआ है। अब तो शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जिसका कोई भी करीबी इसकी चपेट में ना आया हो। मास्क पहनना अभी भी उतना ही आवश्यक है, अपितु मुझे तो ऐसा लगता है कि आने वाले कई वर्षों के लिए सार्वजानिक स्थलों पर मास्क पहनना एक दिन चर्या का हिस्सा न बन जाये ! अब ये तो आने वाले वर्षों में ही पता चलेगा। इन्हीं शब्दों के साथ अपनी बात मैं यहां समाप्त करता हूँ, और आशा करता हूँ की ये अंक भी आपको उतना ही पसंद आएगा। इस अंक की तैयारी में हमें मात्र एक सप्ताह का समय मिला, जो कुछ भी कमियां हैं वो मार्च से सुधार ली जायेंगीं।

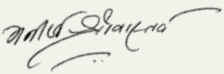

अध्यक्ष की कलम से

दृष्टि का पहला अंक जिसने भी देखा, बहुत सराहा । आवरण से लेकर प्रकाशित रचनाएं बहुत पसंद की गईं । इसका सम्पूर्ण श्रेय संपादक श्री मनीष श्रीवास्तव जी के अनुभव और हिन्दी में अच्छा ज्ञान, और दिन रात की अथक मेहनत को जाता है । उनके रचना चयन की भी मैं दाद देती हूँ।अगले सभी अंक माह की पहली दिनांक को *www.hindiclub.org* में निशुल्क पढ़ी जा सकती हैं । प्रत्येक अंक में आपकी प्रतिक्रिया जानना हमारे लिए बहुत आवश्यक है ताकि हम इसे आपके मनोरंजन के लिए हर माह ल सकें । इसमें साहित्य, कला और मनोरंजन के साथ अन्य विषयों को भी सम्मिलित किया गया है । आपके विचारों से हमें इसे हर माह ओर भी मनोरंजक बनाने में सफलता मिलेगी, इसके साथ ही जनवरी के पहले रविवार से हिन्दी क्लब द्वारा प्रसारित एवं मेरे द्वारा वाचन किया गया फ़ेसबुक लाइव साप्ताहिक कार्यक्रम 'लघुकथा के विभिन्न रंग , हर रविवार नीलम के संग' भी बहुत पसंद किया जा रहा है। इसे आप हर रविवार *Gurbachan Kur Neelam Facebook page* पर सुबह ११ बजे *(*शिकागो*)* और भारत रात १०.३० बजे देख सकते हैं। फरवरी १५, २०२२ को ११ बजे *(*शिकागो*)* समय में हिन्दी क्लब की ओर से डा. निशा पंड्या वेलेंटाइन डे का विशेष कार्यक्रम *Hindi Club of Illinois Facebook page* प्रस्तुत करेंगी। आशा है आपको पसंद आएगा। अगले अंक तक आप सभी पाठकों का धन्यवाद देते हुए विराम ।

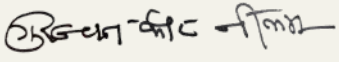

साहित्य

सूर्यकांत त्रिपाठी "निराला"

वीणा - वादिनी

तव भक्त भ्रमरों को हृदय में लिए वह शतदल विमल
आनन्द-पुलकित लोटता नव चूम कोमल चरणतल।

बह रही है सरस तान-तरंगिनी,
बज रही है वीणा तुम्हारी संगिनी,
अयि मधुरवादिनि, सदा तुम रागिनी-अनुरागिनी,
भर अमृत-धारा आज कर दो प्रेम-विह्वल हृदयदल,
आनन्द-पुलकित हों सकल तव चूम कोमल चरणतल!

स्वर हिलोरं ले रहा आकाश में,
काँपती है वायु स्वर-उच्छवास में,
ताल-मात्राएँ दिखातीं भंग, नव रति रंग भी
मूर्च्छित हुए से मूर्च्छना करती उठाकर प्रेम-छल,
आनन्द-पुलकित हों सकल तव चूम कोमल चरणतल!

सौरभ सिंह

हाँ ज़रूर देखना बड़े- बड़े शहरो
के सपने
लेकिन मत भूलना कहाँ खुली थी,
तुम्हारी पहली बार आँख
कहाँ गंध पाया था तुमने
वो बारिश के बाद
सौंधी मिट्टी का
किसने भरा था
बिना एहसान दिखाए
तुम्हारा पेट
कौन बेशक़ीमती लगता है ?
जब बाज़ार में खुलेआम है
सबकी क़ीमत,
कभी कभी ज़रूर लौटना वहाँ
ले आना खुशबू ,
भर लेना पेट
और थोड़ा बाँध भी लेना
ख़ुशियों से भरा गमछा
ताकि उन्हें भी दे सको
जिन्होंने चकाचौंध को ही
रोशनी जान लिया ।

मैं नही जान सका सौरमंडल को ,
कितने ग्रह-उपग्रह, असंख्य धूमकेतु
करोड़ों तारे , अनगिनत नक्षत्र ,
हाँ डरा भी जब कभी सुना
कुछ उल्का पिंडो का,
धरती के तरफ़ आना ।

लेकिन उनको भी तो नही पता
कि इन सब के बीच धरती पर
एक देश के छोटे से गाँव में मैं,
और मुझमें सपनो की आकाशगंगा,
जो पूरे ब्रह्मांड को भी नाप सकता है

हरदीप सबरवाल

आसान

सोचता हूं,
ईमानदार हो जाऊं अपने शब्दों को लेकर,
और खड़े कर लूं अपने इर्द गिर्द,
ढेरों ढेर शत्रु,
ईमानदार होना, वो भी शब्दों के साथ,
इतना आसान तो नहीं,
जितना सहज और आसान होता है
एक ईमानदार कविता लिखना.....

यथार्थ

यथार्थ से जूझती कहानियां
रहती हैं उदास और अकेली,
यथार्थ की तरह ही,
मनोरंजन से लबरेज परी कथाएं,
घेरे रखती तमाम हर्षोल्लास,
और घिरी रहती रंगीनियों से...

तमाशा

मौलिकता की मौत पर,
नहीं फटी धरती
ज्वालामुखी ने नहीं उगला लावा,
ना आई सागर में सुनामी,
ना ही गिरे पहाड़ धड़धड़ाते हुए,
सिर्फ शब्दों ने,
जान बूझ कर साध ली खामोशी,
कि चलन में है तमाशा
और तमाशा तो चलता है
सिर्फ शब्दों के हेर फेर से,
चाहे वो थके हो या हारे,
या हुए हो चोरी,
तमाशा चलने दो.....

संगीता बाजपई

वेगास का सूरज

जहां जागते हैं सैलानी, खेल खेलते
सारी रात,
नहीं डूबता है जब सूरज
निकला रहता आधी रात ।

रेत की इस दरिया की कैसी है धूम ?
थिरकी बिजलियां झूम-झूम,
रोलेट, जुआ, सट्टा-बट्टा
लूट मचा दे सिक्के चूम,
रात का यह सूरज दिखता
धड़कते हुए अंगारे सा,
न सीख बिन सुधि खेलता,
चौसर के गलियारों का,
न गर्मी ना सर्दी, बस लहराता मधुमास,
सूरज जब चमके आधी रात ।

क्यों सूरज में आग लगाते हो,
शकुनी बन खुद ही का घर जलाते हो?
परदेश की धूप पराई है,
क्या कभी मधुशाला ने घर में जगह
बनाई है ?

बने हुए इस स्वर्णमृग को बहिष्कृत कर
तू दे दे मात
सूरज फिर चमके इस कायनात ।

क्या तू दीप जलाएगा ?
या फिर किसी रश्मि को
चौबारे में घसीट ले जाएगा?
यह धरा वेगास की
धूल में ध्वस्त हो जाएगी,
दांव पर होगी द्रोपदी,
एक नई महाभारत छिड़ जाएगी,
यही सूर्य बाँटता रस अनवरत हर प्रभात,
सूरज जब निकले ना हो रात ।।

छट जाएगा अंधियारा,
जब रोशन होगी उसकी ज्वाला
लाएगा खुशियां उजियारा,
मुस्काएगा मन मतवाला
तेजस्वी अस्त ना हो,
भीष्म यह प्रण कर हो प्रख्यात,
फिर कभी न चमके सूरज आधी रात ।।

शुभ्रा ओझा

हम मुस्कुराए जा रहे हैं

जिंदगी उलझी पड़ी है
और हम सुलझाए जा रहे हैं ,
हँस - हँस के भरी महफिल में
जिंदगी पर ही गजलें सुनाए जा रहे हैं।

पूछने को मेरा हाल - चाल अब
लोग मेरे घर तक आए जा रहे हैं,
और हम भूल कर अपना दर्द
देखो सिर्फ मुस्कुराए जा रहे हैं।

कुछ अपने हो रहे बहुत आतुर
मेरी राहों में पत्थर बिछाए जा रहे हैं,
हम आसमां पर टिका के नजरे
हौले - हौले से कदम बढ़ाए जा रहे हैं।

उजाड़ के वो मेरी हसीन दुनिया
देखो कैसे जश्न मनाएं जा रहे हैं,
कोई तो जाके उनको बताए
दुआओं में हम उन्हीं को दोहराए जा रहे हैं

जो कभी करते थे बहुत फिक्र हमारी
गैरों संग दुनियादारी निभाए जा रहे हैं,
नज़र रखते अब भी मुझ पर ही
जाने क्यों खुद को जलाए जा रहे हैं।

मोनी श्रीवास्तव कोइराला

बिहार के मोतिहारी में जन्म, दोहा, क़तर में निवास, मार्शल आर्ट(ताई क्वांडो - ग्रीन वन बेल्ट), सॉफ्टवेयर इंजीनियरिंग में स्नातकोत्तर ब्लॉगर,कवयित्री,लेखिका,समसामयिक लेख मॉम्सप्रेसो हिंदी ७७ विचार,लेख,कहानियां, कविता इत्यादि लिखी है! कई कवितायेँ विभिन्न सम्मानित मंचों पर प्रकाशित वर्ल्ड बुक ऑफ रिकॉर्ड्स लंदन द्वारा प्राप्त सम्मान पत्र (एक महान साहित्यकार पर लिखी कविता के लिये)! शेयर योर ह्यूमैनिटी संस्था की संस्थामिका दो साहित्यिक संस्था की पूर्व अध्यक्ष और रेडियो में आरजे(फिलर्स) के तौर पर कुछ महीनों का अनुभव ।

ई - मेल - monibijay@gmail.com

क़तर में हिंदी का प्रसार

कतर विश्व का पहला ऐसा देश है जो *सुरक्षा और आमदनी* के हिसाब से सबसे अव्वल देश माना जाता है। और अपना अनुभव कहूं तो सच में यहां बहुत सुकून और शांति है। हर धर्म के लोगो का आदर होता है। किसी प्रकार की रैली ,विरोध, झगड़ा चोरी इत्यादि नहीं देखी मैंने अभी तक। हां देखा है तो उत्साह से भरे अनन्य कार्यक्रम। जिसमें हर देश के त्योहार के सम्मिलित है । हर व्यक्ति यहां कानून पालन करते हुए दिखता है। इसी वर्ष यहां नवम्बर माह में *फीफा विश्वकप* भी होनेवाला है। इस प्रकार एशिया में फीफा विश्वकप आयोजन दृष्टिकोण से भी कतर प्रथम है।

हिंदी का विस्तार कतर में तो विश्व का कोई एक कोना भी ऐसा नही है जहां भारत के लोग और भारत की भाषा की पहुंच नही है। हिंदी की पहुंच यहां भी बहुत ही विस्तृत है। भारत के केरल राज्य के लोग गल्फ देशों में अधिकाधिक मात्रा में है और इस तरह पहले मलयाली भाषा की प्रमुखता थी। परंतु आज के परिप्रेक्ष्य में कतर में भारत के विभिन्न राज्य के लोग रोजगार कर रहे है। और विगत कुछ वर्षों में हिंदी का विस्तार बहुत ही तेज़ी से हुआ है।

हिंदी के विस्तार का माध्यम अलग अलग है, बोलचाल में, लिखने पढ़ने में, साहित्य और संस्कृति द्वारा, पर्व त्योहार के गाने,फिल्मी गाने और कार्यक्रम मंचन इत्यादि ।

हिंदी बातचीत का माध्यम सबसे सशक्त माध्यम है जिससे की रोजगार के लिए आए लोग जो सिर्फ़ भारत के ही नही होते बल्कि नेपाल, बांग्लादेश, पाकिस्तान, श्रीलंका इत्यादि बहुत से देश के लोग है जिनके रोज़गार का माध्यम ही हिंदी बातचीत के द्वारा है।

मज़दूर श्रेणी से लेकर उच्च श्रेणी के लोग भी आपस में हिंदी संवाद के जरिए ही जुड़ते है। पुराने कतरी अरबाब तो बहुत अच्छी हिंदी में बात करते है। इस प्रकार *बातचीत का माध्यम हिंदी विस्तार में सबसे सशक्त माध्यम* माना जा सकत है।

दूसरा माध्यम है *लोक संस्कृति, फिल्मी गीत - संगीत और साहित्य सम्मेलन* इस माध्यम के ज़रिए जो भारत के नही है वो भी इसमें अपना खिंचाव महसूस कर जुड़ने को आतुर हो जाते है, मै यहां जिक्र करना चाहूंगी की हाल ही में हुए *Baloon festival* कार्यक्रम में एक ही मंच पर भारत और अरब देश की संस्कृति का एक साथ आदर और प्यार पाते हुए मैने देखा। अरबी संगीत पर जब वहां के कलाकार गा रहे थे तो तालियों के द्वारा और समूह समूह में बंटकर पुरुष और बच्चे नृत्य करके उनका हौसला अफजाई कर रहे थे, स्त्रियां,बच्चे सब वहां आनंद ले रहे थे। मेरे बच्चे भी उस संगीत के ताल पर नृत्य में रम रहे थे। जब हिंदी गीत की बारी आई और कुछ हिंदी गीतों के समिश्रण पर लड़कियों का नृत्य हुआ तो पूरे पार्क में तितर - बितर खड़े लोग मंच के तरफ शांति और उत्सुकता से दौड़ते हुए दिखाई दिए। सबने अपने अपने मोबाइल से उस खूबसूरत पल को कैद किया

और तालियों की गड़गड़ाहट की गूंज सर्वत्र सुनाई दी। जिसमें भारतीय हाथो के साथ साथ अरब,अमेरिकन,नेपाली,बंगाली,पाकिस्तानी,
फिलिपिंस, इजिप्ट इत्यादि बहुत से देश के लोगो के हाथ भी थे। सबकी खुशियां यह आभास करा रही थी * भारतीय हिंदी गाने* हर जुबां को बहुत भाती है।
यहां हर त्योहार होली,दीपावली, ओनम,क्रिसमस, ईद आदि बहुत ही शांतिपूर्ण तरीके से मनाया जाता है। कतर के नियम का ध्यान और सम्मान करते हुए। कतर आधिकारिक लोगो से अनुमति लेकर ही बाहर बड़े बड़े आयोजन किए जाते है,जो मुझे लगता है हर देश के नियम होते है और होना भी चाहिए। नियम पालन अनुशासन में रहना सिखाती है।
अगला एक और सशक्त माध्यम है *स्कूलों में हिंदी पाठन और लेखन:-* इस पर प्रकाश डालना चाहूंगी यहां के भारतीय स्कूलों में *हिंदी का स्थान दूसरा है।* जो इसलिए है की भारत एक ऐसा देश है जिसमें बहुत सी भाषा बोली जाती है। यहां रहने वाले परिवार में,हिंदी के अलावा मलयालम,तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बंगाली, मराठी, नेपाली, पहाड़ी, भोजपुरी, अवधि इत्यादि बहुत सी अनन्य भाषाई परिवार है जिन्हे पूरी तरह से हिंदी नही आती इसलिए प्रथम स्थान पर अंग्रेजी ही एक ऐसा माध्यम है जो सबके बीच अभी सेतु बना है। पर अगर इसपर ध्यान दिया जाए तो *भारतीय स्कूल ही वह प्रथम जगह होगी जहां से हिंदी को पहला स्थान मिलेगा*। इस तरह भारतीय परिवार बच्चो के साथ हिंदी की शुरुआत अपने घर से करेंगे जिससे की हमारे बच्चो को अंग्रेजी तो सीखना होगा पर पहला पढ़ने लिखने का माध्यम हिंदी ही होगा। जिससे भविष्य कितना सुखद होगा इसकी कल्पना आप लोग कर सकते हैं। यह विषय सोचनेवाली है जिसपर हर देश के भारतीय दूतावास बेहतर ढंग से कार्य कर सकते है।
यहां की भारतीय दूतावास और उसके तत्वाधान में चलने वाली कुछ संस्थाएं भारतीय पर्व के द्वारा हिंदी सभ्यता,भाषा और संस्कृति को विकसित कर रही है। जिसमें आईसीसी, आईसीबीएफ और एनआईए जैसी संस्था है।
बातें तो अभी भी बहुत सारी है पर वह दूसरे लेख में। इसलिए आज के इस लेख को अंतिम स्वरूप देते हुए अपने मंच का जिक्र भी जरूर करना चाहूंगी,आज उसी मंच की अगुवाई करते हुए यह लेख आपको पहुंचा रही हूं। तो दोहा कतर में बहुत से अन्य मंच के साथ ही *शेयर योर ह्यूमैनिटी ग्लोबल प्लेटफार्म* और इसका एक सिस्टर ग्रुप बच्चों के लिए भी है *शेयर योर टैलेंट एंड क्रिएटिविटी (किड्स वर्ल्ड)* जो मानवता, सकारात्मकता, शिक्षा,साहित्य,संस्कृति और समाज में रहनेवाले लोगो को एक मंच पर जोड़ती है बल्कि हर तरीके से हिंदी का मान बढ़ाने में बहुत तेजी से कार्य कर रही है। यहां विश्व में फैले न सिर्फ भारतीय बल्कि हर देश के लोग एक समूह में रहते है। यहां हर धर्म, हर भाषा, हर वर्ग के लोगो का मान सम्मान होता है। जो जिस भाषा में सहज है बोल सकता है। उपरोक्त चर्चित सभी मध्यम के द्वारा लोगो को जोड़ने का प्रयास रहता है। अनेकानेक कार्यक्रम अभी तक किए जा चुके है । विगत तीन वर्षो में मानवीय संवेदना के हर पहलू को लोगो के समक्ष रखा गया है। शिक्षा, साहित्य, संगीत ,सेवा हर तरह के कार्यक्रम किए गए है। लोक गीत तीज त्योहार, देशभक्ति प्रोग्राम के द्वारा हर भारत के हर क्षेत्र के लोगो को उनके मिट्टी का रंग और देश प्रेम में रंगा जाता है।
मानवता और सकारात्मक यहां की सबसे मुख्य कार्य है ,जिसमे निशुल्क न सिर्फ समय और मंच दिया जाता है अपितु हर तरह की सहायता के लिए सदस्य और मंच के लोग आगे रहते है। मानवता के लिए उठे हर हाथ को मंच पर लाकर सम्मान दिया जाता है। स्त्रियों में आत्मविश्वास लाया जाता है उन्हे प्रोत्साहित करके , उन्हे ग्रुप लीडर बनाकर,

स्त्री -पुरुष, बच्चे- बूढ़े हर उम्र के लोगो के अंदर को हुनर को पहचान कर उसे प्रोत्साहित किया जाता है। हर सप्ताह अंताक्षरी, हिंदी रचनाओं,हुनर, आर्ट एंड क्राफ्ट,महान व्यक्तित्व पर लेख,बच्चो से जुड़ी मस्ती के साथ साथ पाठशाला इत्यादि बहुत से ऐसे कार्य है जिसपर उन्हे टास्क दिया जाता है और मंचन किया जाता है,जिससे की उनकी रुचि और उत्साह में वृद्धि होती। कतर के सभी कवि कवयित्री, कलाकार, शिक्षक, बच्चे ओर सामान्य लोगो को एक ही मंच प्रदान किया गया है। जिससे लोग न सिर्फ जुड़ते हैं बल्कि कभी भी किसी को मदद की आवश्यकता हो तो आगे रहते हैं। यहां मुख्य रूप से हिंदी भाषा ही बोली और लिखी जाती है,और उसमें ही कार्य किया जाता है, क्योंकि हमारे लिए यही भाषा सबसे सहज,सरल और प्यारी है।
पर *अन्य सभी भाषाओं को हम समान प्रेम और सम्मान देते हैं।*

प्रो. नव संगीत सिंह

अकाल यूनिवर्सिटी तलवंडी साबो (जिला बठिंडा, पंजाब, भारत) में पोस्ट ग्रेजुएट पंजाबी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर, अनुवाद में रुचि, पंजाबी से हिन्दी में २४ किताबें अनुवादित, जेमिनी एकेडमी, पानीपत की ओर से २००४ में 'सुभद्रा कुमारी चौहान सम्मान' से सम्मिमानित

ई-मेल : navsangeetsingh1957@gmail.com

प्यारा घर

रितु कभी-कभी अपने मम्मा-पापा को घर बदलने के लिए कहती, "पापा, हम यहां क्यों रहते हैं? चलो, कहीं अच्छी जगह चलते हैं। इस गांव में तो कोई भी सुविधा नहीं है, न कोई ढंग की दुकान।" पापा की जगह अकसर मम्मा जवाब देते, " बेटा, हमने बड़ी मेहनत से घर बनाया है। अभी यहाँ ठीक हैं। फिर जब तुम्हें किसी शहर में नौकरी मिल जाएगी, तो हम वहां शिफ्ट हो जाएंगे, ठीक है...!"

रितु अपनी सहेलियों को घर बुलाने में झिझकती थी क्योंकि जिस एरिया में वे रहते थे, वह घुमावदार था, गली आधी-पक्की थी, लेकिन हां, उनका घर बहुत अच्छा था।

जब यूनिवर्सिटी में पुस्तक-मेला लगा, तो रितु ने वहाँ जाने का मन बनाया। क्योंकि पिछले करीब डेढ़ साल से उसकी ऑनलाइन कलासें ही चल रही थीं। और वह घर बैठी-बैठी बोर-सी हो गई थी।रितु ने हॉस्टल में रहती अपनी एक सहेली से संपर्क किया और उसके जवाब के बाद वह दो दिनों के लिए यूनिवर्सिटी चली गई। हॉस्टल में रात्रि-विश्राम, एक ही रज़ाई में दो लोगों का सोना, नहाने के लिए ठंडा पानी, हॉस्टल का बेस्वादा भोजन.... तीसरे दिन जब वह घर लौटी, तो वह मम्मा-पापा से ऐसे मिली, जैसे वह कई वर्षों के बाद मिली हो। रात्रि को वह इतनी अच्छी तरह सोई कि अगले दिन सुबह दस बजे तक सोती रही।

जब वह उठी, तो उसने मम्मा से कहा, "मम्मा, मैं आपसे कहती तो रहती हूं कि 'घर बदलो, घर बदलो', लेकिन अपने घर जैसा मज़ा कहां! यूनिवर्सिटी में तो हम दोनों एक ही पतली-सी रज़ाई में सोते थे, करीब तीनों टाइम बाहर-से टिक्कियां, समोसे, पूरियां खाते थे...अपना घर तो अपना ही होता है...हम तो यहां ही ठीक हैं....!"

जमुआ,गिरिडीह, झारखंड में जन्म, शिक्षा-स्नातकोत्तर, बीएड, (उत्क्रमित उच्च विद्यालय शहरपुरा, जमुआ,गिरिडीह, झारखंड) में सहायक शिक्षक, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में कविता ,लघुकथा और आलेख प्रकाशित, पाक कला, स्वतंत्र लेखन, क्रिकेट एवं ,नाटकों में अभिनय में रूचि

नेतलाल यादव

गुरु ज्ञान

ट्युशन पढ़ने के लिए नरेश एक अच्छे प्रोफ़ेसर का तलाश कर ही रहा था कि उसके कॉलेज में हिंदी विषय के एक नये प्रोफ़ेसर समस्तीपुर कॉलेज से ट्रांसफर होकर आये थे । नाम था- प्रोफ़ेसर अनिल पंडित ।नाम के अनुरूप विषय के भी पंडित थे । अब नरेश के दिमाग में प्रोफ़ेसर से मिलने की चाहत प्रबल हो गई थी और मिलकर जल्द ही ट्यूशन की बात कर लेना चाह रहा था ।

लम्बे कद के प्रोफ़ेसर अनिल कथाकार शिवपूजन सहाय के समान लगते थे वहीं फिल्मों के नायकों से तुलना किया जाय तो नायक जैकी श्राफ जैसे लगते थे ।प्रोफ़ेसर से पहली मुलाकात कॉलेज परिसर में हुई थी । पहली मुलाकात में उन्हें अपना गुरु मान बैठा था नरेश ।सरल और मृदुल स्वभाव के प्रोफ़ेसर से जब भी मिलता चरणों को छूकर आशीर्वाद ले लेता था ।यह चंद मिनटों की पहली मुलाकात वर्षों के समान लगने लगी थी । अब नरेश के जुबान पर सिर्फ प्रोफ़ेसर अनिल ही थे जिनके बारे में अपने मित्रों के बीच घण्टों चर्चा किया करता था ।प्रोफ़ेसर भी नरेश को बहुत प्यार करते थे जैसे द्रोणाचार्य का एक वही अर्जुन हो ।यह बात कॉलेज के सभी स्टाफ भी जान गये थे । गिरिडीह कॉलेज गिरिडीह में तब उन दिनों हिंदी पढ़ने वाले छात्र इक्के ,दुक्के रहते थे इसलिए भी नरेश का प्रोफ़ेसर से बहुत बनती थी ।

एक दिन प्रोफ़ेसर ने नरेश से पूछा था कि तुम मेरा आरगाघाट का निवास स्थान देखा है ।नरेश ने भी तपाक से कहा था जी देखा हूँ ।हलांकि नरेश को कमरा ढूँढने बड़ी मशक्कत करनी पड़ी थी ।अब वह जब मिलता अपने गुरु जी के चरणों को छूकर आशीर्वाद लेने से नहीं चुकता था परंतु अब तक ट्यूशन की बात नही कर पाया था हलांकि घर आने का ऑफर तो मिल ही गया था एक दिन नरेश ने अपने मन की बात प्रोफ़ेसर अनिल के बीच हिम्मत जुटाकर लड़खड़ाते हुए कहा था कि सर मैं आपसे ट्यूशन पढ़ना चाहता हूँ ।

तब प्रोफ़ेसर ने खूब डांट पिलायी थी और कहे थे कि ट्यूशन का मतलब जानते हो! ट्यूशन का मतलब सिर्फ पैसा होता है! कितने रुपये दे दोगे ? वेतन से तो काम चलता नहीं है! अब दो -चार सौ और जोड़ देंगे तो क्या चलने लगेगा । तब नरेश मुकदर्शक होकर केवल सुने जा रहा था पर आज प्रोफ़ेसर नरेश की नजरों में और भी महान हो गये थे क्योंकि उसने पैसों के बदौलत गुरु-शिष्य के सम्बंध को बनते हुए आज तक देखा था ।आज प्रोफ़ेसर की दरियादिली और वसूलों ने नरेश को एक मिनट चिंतन करने के लिए मजबूर किया था ।

अब प्रोफ़ेसर अनिल इस दुनिया में नहीं हैं ।नरेश को भी जानकारी मिली है कि उनका गुरु जी इसी साल राँची रिम्स में जीवन की अंतिम सांस

लियें। कभी हार नहीं मानने वाले प्रोफ़ेसर अपनी बीमारियों के आगे जीवन का जंग का हार गये थे प्रोफ़ेसर जिन -जिन कॉलेजों में गये नरेश जैसे कितने अर्जुन को तैयार किये थे। सबसे बड़ी बात की अपने घर बुलाकर विद्यार्थियों को मुफ्त शिक्षा देते थे ।मजाल है कि उनसे एक रुपये तक लियें हों ।उल्टे खर्चा कर देते थे ।परंतु अपने बच्चों से एक प्रतिज्ञा जरूर करवाते थे कि जैसे मैं अपने बच्चों को मुफ्त शिक्षा देता हूँ वैसे आप लोग भी जीवन में किसी बच्चे से पैसे नहीं लेंगे ।इन दिनों माता-पिता और गुरु के आशीर्वाद से नरेश भी झारखंड सरकार में हाई स्कूल शिक्षक है ।

जब भी अपने विद्यार्थियों से मिलता है तो बरबस मस्तिष्क में जीवन की वह बड़ी बात दौड़े चली आती है कि आप लोग भी जीवन में किसी बच्चे पैसे नहीं लेंगे!आप लोग भी जीवन मे किसी बच्चे से पैसे नहीं लेंगे !

केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल दांतीवाड़ा (केन्द्रीय विद्यालय संगठन) में स्नातकोत्तर शिक्षक- हिंदी, पीएचडी शोधार्थी(हेमचंद्राचार्य उत्तर गुजरात विश्वविद्यालय पाटण), सवाई माधोपुर, राजस्थान में निवास
ई-मेल - rishiskt86@gmail.com

ऋषिकेश मीना

पाटण, गुजरात

स्वाध्याय प्रवचनाभ्याम मा प्रमदितव्यम् आचार्यों के इस महावाक्य को जीवन में धारण करने की जद्दोजहद में कलिकाल सर्वज्ञ आचार्य हेमचंद्र की पावन धरा अन्हिलवाड़ राज्य की राजधानी पाटण (गुजरात) में शैक्षणिक प्रवास का सौभाग्य प्राप्त हुआ। कई दिनों तक अनेक आचार्यों को आभासी रूप में सुनने के उपरांत मौका था विद्यावाचस्पति उपाधि हेतु विश्वविद्यालय में त्रिदिवसीय कार्यशाला का, वैसे तो ज्ञान मार्ग के साधक को गुरुदेव रवींद्रनाथ की उक्ति "एकला चलो रे....." का ही अनुसरण करना पड़ता है परंतु इस यात्रा में साथी शोधार्थी विक्रम सिंह जी का साथ दांतीवाड़ा से ही हो गया। इस यात्रा का आरंभ 22 दिसंबर 2021 को सूर्य देव के उदयाचल पर आरूढ़ होते ही हो गया । मेरी मोटर द्विचक्रवाहिनी वेगवान अश्व की भांति हल्के कोहरे और ठंड को चीरती हुई आगे बढ़ रही थी और पीछे छूट रहे थे आलू के खेत और उनमें चलते जलसीकर वर्षक यंत्र (फव्वारे) । राह में चलते ढोर- ढंगर ,रंग-बिरंगी पोशाकें पहने ग्वाले,छोटे-बड़े गांव- कस्बे मार्ग को और अधिक मनोरम बना रहे थे।

दांतीवाड़ा से पाटण तक पूरे क्षेत्र की एक विशेषता है कि राजमार्ग के दोनों और आधुनिक विकास के अनेक रंगों की बहुतायत के बावजूद प्रकृति का अपना रंग सब पर हावी है यानी हरे भरे खेतों में लहलाती विविध फसलें| कहीं पल्लवित होते आलू के मैदाननुमा खेत ,कहीं पीले जर्द सरसों के फूल तो कहीं एरण्ड (अरण्डी) के पौधे| संस्कृत के कवियों ने *निरस्त पादपे देश एरण्डोपि द्रुमायते* कहकर अरंडी के पौधे के प्रति उपेक्षा प्रकट की है परंतु इस देहवादी युग में अरंडी का तेल सौंदर्य प्रसाधन का मुख्य घटक बनकर इस क्षेत्र के किसानों की आय का प्रमुख स्रोत होने के कारण इसके पौधे यहाँ के खेतों में अपना प्रभुत्व कायम किए हुए हैं| इस प्रकार लहलाते खेतों के बीच से गुजरते राजमार्ग पर दौड़ते-भागते विश्वविद्यालय पहुंचकर कार्यशाला में भाग लिया।

कार्यशाला दिन भर समुद्र मंथन की भांति अपनी गति से चलती रही कई व्याख्यान सत्रों एवं चर्चा-परिचर्चा के बाद प्रथम दिवस का विराम घोषित हुआ| सूर्य अस्ताचल के शिखर पर विराजमान होने को उतावला हो रहा था| नवागंतुक होने से बाहर से आने वाले शोधार्थियों को रात्रि -विश्राम हेतु आशियाना भी तलासना था तभी हमारे आचार्य श्री अर्जुन तड़वी जी ने व्हाट्सएप पर मौखिक संदेश भेजकर रात्रि विश्राम स्थल की चिंता का निवारण कर लगे हाथ गंतव्य स्थल का

मार्गदर्शन भी कर दिया। विश्राम स्थल पाटण शहर से कोई 2 कोस दूर प्रकृति के सुरम्य वातावरण में कुणघेर गाँव में चुड़ैल माता के मंदिर की धर्मशाला थी। गूगल के बताए मार्ग का अनुसरण कर हम अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहे थे। सूर्य का ताम्र बिंब हमारे सम्मुख था जो धरती की ओट में जाने से पहले कुछ क्षण रुककर हरी-भरी फसलों से विदा ले रहा था। सांझ के इस मनोरम दृश्य पर साथी शोधार्थी बुधराम जी के कवि हृदय के उद्गारों का श्रवण करते करते गंतव्य स्थल पर पहुंचे गये।

वैसे तो जीवन में नाम और रूप का वैषम्य सदैव देखा जाता है ऐसा ही चुड़ैल माता का नाम सुनते ही लगने लगा क्योंकि अब तक चुड़ैल का नाम जिन संदर्भों में सुना था आज उससे विपरीत था इसी नाम और रूप के वैषम्य पर चर्चा करते करते न जाने कब नींद आ गई। अगले दिन सुबह स्नानादि से निवृत होकर मंदिर में पहुंच गये। प्रातः कालीन वातावरण में मंदिर की शांति और पावनता बरबस ही मन को आह्लादित कर रही थी। मां के चरणों में पुष्पमाल अर्पित कर मैं आशीर्वाद लेने के लिए ध्यान मुद्रा में बैठ गया ध्यान का अनभ्यस्त मन ध्यान में तो नहीं लगा पर चुड़ैल शब्द और यहां प्राप्त देवी पदवी पर तर्कपूर्ण चिंतन करने लगा। कोई मनुष्य होकर भी क्रूर राक्षस बन जाता है और कोई चुड़ैल होकर भी लोकोपकारी कार्य करके देवत्व को प्राप्त कर लेती है। कर्म का विधान संसार में सबसे बड़ा है।मनुष्य ही नहीं अदृश्य शक्तियां भी इस बंधन से मुक्त नहीं है। वाह रे! कर्म विधान तेरी महिमा नेति-नेति है।

इन्हीं विचारों में खोया हुआ मैं दूसरे दिन की कार्यशाला रूपी समुद्र मंथन में प्रवृत्त हुआ परंतु इस मंथन से जिस अमृत तत्व की चाह शोधार्थी कर रहे थे वह तत्व सरल हृदय आचार्य श्री अर्जुन तड़वी जी के व्याख्यान से प्राप्त हुआ। कैसे सहज और सरल शब्दों में प्रेरणा के बीजों का रोपण हो रहा था। अनेक प्रश्नों के उत्तर देते शंकाओं का समाधान करते कब व्याख्यान का समय पूरा हो गया आभास ही नहीं हुआ।

सूर्यास्त होने मैं दो- तीन घड़ी का समय शेष था सो *रानी की वाव* देखने पहुंच गए प्राचीन सरस्वती नदी के किनारे। नदी के वर्तमान प्रवाह से एक मील की दूरी पर नदी के उथले तट पर चार-पांच एकड़ की हरी दूब युक्त वाटिका के बीचों-बीच स्थित है *रानी की वाव*।

वाव शब्द संस्कृत के *वापि* शब्द का अपभ्रंश रूप है, होता भी क्यों नहीं आखिर अपभ्रंश के सबसे महान आचार्य की तपोभूमि पाटण है। वाव के द्वार पर पुरातत्व विभाग का सूचना फलक लगा हुआ है जो वाव के निर्माण, आप्लावित होने और पुनरुत्खनन की सपाट बयानगी पेश करता है। लेख के अनुसार इसका निर्माण मूलराज सोलंकी के वंशज भीमदेव की रानी उदयमति ने 11वीं शताब्दी के अंतिम चतुर्थांश में करवाया था।ऊपर से देखने पर वाव ज्यादा आकर्षक नहीं लगी। वाव की दीवारों पर उकेरी गई मूर्तियों को निहारते हुए जैसे-जैसे

सीढ़ियों से नीचे उतर रहे थे तो ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो एक हजार वर्ष पुरानी आर्ट गैलरी हमारे सामने इतिहास और जीवन के रहस्यों को उद्घाटित कर रही हो। कभी इसके आंगन में पनिहारिनों का मेला लगता होगा। लू से झुलसा देने वाली तप्त दोपहर में रानियां विश्राम करती होंगी। उनके हास-परिहास की गूंज को आज भी सुना जा सकता है।वाव की दीवारों पर ब्रह्मा- विष्णु-महेश- इंद्र -कुबेर- कार्तिकेय -गणेश आदि देवताओं की सपत्नीक मूर्तियां विराजमान है जो गृहस्थ धर्म का महत्व बताने के लिए पर्याप्त है। अप्सराओं की श्रृंगार करती मूर्तियां बड़ी ही मनोरम और सजीव लग रही थी। कुछ मूर्तियों से कामुकता झलक रही थी ।क्या यहां भी नारी देह को काम और भोग की वस्तु माना गया है? इसी ऊहापोह के बीच मेरी दृष्टि एक अप्सरा की मूर्ति पर पड़ती है जिसके पैर के पास एक मर्कट(वानर) बैठा है जो अप्सरा के कटि प्रदेश के वस्त्र को खींचता है और अप्सरा शर्मिंदा होकर वस्त्र को संभाल रही है यह मर्कट मन की चंचलता (मन-मर्कट) का प्रतीक है जो सदैव मनुष्य को पथभ्रष्ट कर लज्जा रुपी वस्त्र का हरण कर बेइज्जती करता रहता है। यहाँ मौजूद प्रत्येक कलाकृति जीवन के गूढ़ रहस्यों को सहज ही उद्घाटित करती है । यह वाव भोग,योग और भक्ति की त्रिवेणी है। हम वाव की एक-एक मूर्ति को देखते हुए पांचवे तल पर पहुंच गये। यहां से आगे के दो तलों में जाने की अनुमति नहीं है इसलिए यहीं पर खड़े हो गये। वातायन से मुख्य कूप के केंद्र में शेषनाग पर शयन करते विष्णु की मूर्ति को देखकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो आज भी पर्यटकों को अपना आशीर्वाद प्रदान कर कर रहे हैं।

वापी में अंधेरा बढ़ने लगा था इसलिए मौजूद सुरक्षाकर्मी सबको बाहर आने की सूचना दे रहे थे। मूर्तियों को निहारते हुए हम बाहर आ गये परंतु मेरा मन वापी की खूबसूरती पर मुग्ध था। मैं हैरान था कि एक हजार वर्ष पूर्व बनी इस वाव का सौंदर्य कितना अद्भुत है। लोग कहते हैं कि सरस्वती नदी में आई बाढ़ के कारण यह वाव 700 से अधिक वर्षों तक नदी की रेत में दबी रही। परंतु मेरा मानना है कि धन-धान्य से संपन्न गुर्जरी धरा की राजधानी पाटण पर अनेक देशी-विदेशी मूर्ति-भंजक आक्रांताओं ने आक्रमण किया था। धरती माता ने उन क्रूर और आततायी शासकों के आक्रमण से बचाने के लिए इस अनमोल निधि को अपने गर्भ में धारण किया है और जब सारा तूफान निकल गया तब उसे पुनः उसी रूप में हमारे सामने प्रकट कर दिया। निश्चित ही प्रकृति संहारक है तो सिरजणहार भी है। जनश्रुति है कि महारानी उदयमति ने राजा की मृत्यु के उपरांत प्रचलित सती प्रथा के विरुद्ध जीवन को धारण किया और अपने पति की स्मृति में वाव का निर्माण कर अपनी प्रजा को धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चतुर्विध पुरुषार्थों की

शिक्षा के साथ अमृततुल्य जल उपलब्ध कराया। यह वाव नारी सशक्तिकरण का जीता जागता उदाहरण है। भारत ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्व में महिलाओं द्वारा किए गए निर्माण कार्यों में यह सबसे महान है यदि ताजमहल प्रेम का प्रतीक है तो यह वाव परोपकार और कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष व नारी मुक्ति का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। आज भारतीय मुद्रा के ₹100 के नोट पर इसका फोटो छाप कर इसे ही नहीं अपितु सम्पूर्ण नारी जाति को सम्मान प्रदान किया है।

वाव के अद्भुत सौंदर्य पर चर्चा करते करते अपने विश्राम स्थल पर पहुंच गये। कल रात ठंड का अहसास हुआ तो आज सोने से पहले धर्मशाला के सेवक जी से एक-एक चद्दर और ले लिया और चादर तान कर सो गए।

तीसरे दिन पूर्व सूचना के अनुसार परीक्षा का आयोजन होना था इसलिए दी गई समय मर्यादा में विश्वविद्यालय पहुंच गए। सख्त निगरानी में परीक्षा संपन्न हुई जिसमें गर्दन उठाकर सामने देखना भी मुनासिब नहीं हुआ।

कार्यशाला में आए हुए साथियों से घरोबा हो गया सो सब को विदा कर सब से विदा हो बुधराम जी के साथ पटोला हाउस पहुंच गये। पटोला एक प्रकार की वस्त्र बनाने की कला है जो संपूर्ण विश्व में केवल पाटण में ही देखी जा सकती है।इस कला को पाटण में लाने का श्रेय महाराज कुमारपाल को है। इसका इतिहास भी रोमांचित कर देने वाला है परंतु लेख के कलेवर को अति विस्तार न देने के उद्देश्य उसका वर्णन यहां नहीं करूंगा। किसी जमाने में पाटण में 700 परिवार इस कार्य को करते थे परंतु औद्योगिक क्रांति के आने के बाद मशीनों द्वारा वस्त्र बनाए जाने लगे। भारत का कच्चा माल विदेशों में जाने लगा और भारतीय बाजारों में सस्ते मशीनी कपड़े की बहुतायत हो गई। दूसरी ओर देश ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया सो धीरे-धीरे राजे -रजवाड़ों का प्रभुत्व कम हो गया। कारीगरों ने बेरोजगारी से तंग आकर इस कला को छोड़ दूसरे व्यवसाय अपना लिए।आज केवल चार परिवार ही पाटण शहर में इस कला पर कार्य कर रहे हैं। पटोला की कोई दुकान बाजार में नहीं है। अपितु कारीगर अपने घर पर ही इसे बनाते हैं और बेचते हैं। पटोला हाउस के युवा कारीगरों ने यह जानते हुए भी कि हम पटोला के खरीददार नहीं है फिर भी गर्मजोशी से हमारा अभिनंदन किया और छोटे से घर के अंदर अलग-अलग कमरों में अलग-अलग स्तर का काम कर रहे युवक-युवतियों के पास लेकर गया और इस ताना-बाना की पूरी कबीरी प्रक्रिया से अवगत कराया जिससे झीनी-बीनी चदरिया बनाई जा रही थी। मेरी बात अब उस युवा कारीगर से होने लगी जो एक खूबसूरत साड़ी बना रहा था। मेरे से बात करता हुआ वह धागों को क्रमिक रूप में रखकर पटोला

पैटर्न के अनुरूप बांध रहा था| मैं हाथ से वस्त्र बनता हुआ पहली बार देख रहा था| मन गदगद हो गया किस प्रकार महीन सिल्क के धागे बेशकीमती साड़ी का आकार ले रहे थे | मैंने कारीगर से पूछा कितने समय में एक साड़ी बनती है| उसने बड़ी सहजता से उत्तर दिया साहब आठ -दस घंटे रोज काम करें तो चार-पांच महीने लग जाते हैं | डिजाइन के अनुसार समय कम या ज्यादा लग सकता है | बड़ी तपस्या करनी होती है इस कला को अंजाम तक पहुंचाने में तभी तो मनुष्य की आयु से भी दो गुनी गारंटी होती है इस कपड़े की | कपड़े का मूल्य और गारंटी सुनकर पैरों तले की जमीन खिसक गई सो हम भी वहां से खिसक गए| अब घर जाने का समय हो रहा था तो बच्चों के लिए कुछ मीठा लेने बाजार चले गये| देसी घी की देवड़ा मिठाई पाटण में विशेष रुप से बनाई जाती है सेर-सेर मिठाई और विश्वविद्यालय से प्राप्त मीठी यादें पल्ले बांध ली और घर को चल पड़े|

चंद्रेयी लाहिड़ी

कलकत्ता में जन्म, अफ्रीका में पली बढ़ी, विश्व के कई देशों में रहीं, २५ वर्षों से अमेरिका में निवास, भू विज्ञान में परास्नातक, लघु कथा और अनुवाद में विशेष रूचि, प्रतिष्ठित "बोस्टन इन १०० वर्ड्स" श्रृंखला में लघु कथा "जेलीज़ इन चार्ल्स" का चयन, बोस्टन बुक फेस्टिवल द्वारा प्रायोजित "वन सिटी वन स्टोरी" में यहाँ प्रकाशित कहानी "डुम्बा चौरा" को पहला स्थान ।

ई-मेल - *chandreyeel@yahoo.com*

वेब-साईट - *www.chandreyeelahiri.com*

डुम्बा चौरा

हिंदी अनुवाद - मनीष श्रीवास्तव

डुम्बा चौरा पर शाम ढल रही थी । सुतापा कभी अपनी साड़ी का पल्लू संभालती तो कभी जंगल के बाहरी छोर को देखती। उसकी आंखों में बेचैनी साफ़ देखी जा सकती थी।

"अरे कुछ हुआ?" शेखर चिल्लाया। उनका मल्लाह रहमान, नाव से लगे उस लम्बे बांस नुमा चप्पू के पास खड़ा था। तेज़ी से घटती लहरों के कारण उस महीन, गीली, डेल्टाइक मिट्टी ने चप्पू का निचला हिस्सा पूरी तरह से निगल लिया था और नाव जैसे उसके जबड़े में जकड़ सी गयी थी। सारे आस पास के रहने वाले लोग मिटटी के उस दलदल को अच्छी तरह से पहचानते थे। रहमान खुद भी अब तक उससे बचता चला आ रहा था।

"बाबू, अब ऊँची ज्वार की लहरें ही इस नाव को बाहर निकाल सकतीं हैं।" रहमान की आवाज़ के दृढ़ निश्चय में उसका अनुभव साफ़ था।

इधर सुतापा और शेखर अलग थलग से ठीक उसी जगह किनारे पर खड़े थे जहां वे पानी का स्तर घटने के बाद हड़बड़ाहट में उतर गए थे। नाव हल्की करके उसे दलदल से निकालने की ये उनकी आखरी नाकाम कोशिश थी। उस गीली चिकनी मिट्टी में चलना लगभग नामुमकिन था इसीलिए दोनों नाव की ओट का सहारा लिए खड़े थे। बांस के डंडे के सहारे नाव को निकालने कीकोशिश में रहमान ने डंडा ज़ोर से बाहर की ओर खींचा। डंडा रहमान के सर के ऊपरसे लहराता हुआ नाव पर आ गिरा। उसने अपने सर पे बंधा गमछा झटके से खोला जो तुरंत बहती हवा से पतवार जैसा लहराने लगा। रहमान ने गमछा अपने कन्धों पर कस कर बांध लिया। ये उसे शाम की ठंडक से तो निजात नहीं दिला सकता था लेकिन ठंडी हवा से थोड़ा बचाव तो कर ही सकता था।

"ऊँची ज्वर की लहरें? लेकिन तुमने तो कहा था की आधी रात से पहले नदी का पानी नहीं बढ़ेगा। ओ मां अब क्या होगा ?" सुतापा ने कंपकंपाते हुए पूछा। उसके कदम अनायास ही शेखर की ओर बढ़ गए थे। जैसे ही उसने एड़ियों के नीचे से अपनी साड़ी खींची, कलाई में चढ़ी सुहाग की शंखा - पोला चूड़ियां खनक उठीं। चेहरे पे हल्की मुस्कान लिए शेखर ने हिचकिचाते हुए अपना हाथ सुतापा की पीठ पे रखा और दबे पांव मिट्टी से होते हुए नाव की ओर बढ़ा। शेखर ने जैसे तैसे अपने ६ फुटे शरीर को नांव के ऊपर खींचा और फिर मुहाने पे रखे पटरे पर चढ़ गया। अपनी लम्बी उँगलियों से ,अधखुली आँखों को, ढलते सूरज की रौशनी से बचते हुए उसने चारो ओर नज़र दौड़ाई। समंदर जैसी फैली जिस ठाकुरन नदी पर उनकी नाव अभी तक अठखेलियां कर रही थी वो अब किसी घुमावदारतलछट से निकली छोटी सी धारा में तब्दील हो चुकी थी। करीब सौ मीटर की दूरी पर शाम की ढलती रौशनी में लहरों की चमक साफ देखी जा सकती थी। नदी उतनी ही खुशनुमा और चमकदार थी जितना दूसरी तरफ जंगल उदास और काला घना गहरा। इसके अलावा जिधर भी नज़रें दौड़ाओ सिर्फ गीली मिट्टी के टीले ही नज़र आते थे जैसे नदी के किनारों को किसी ने कपड़े खींच कर नंगा कर दिया हो।कीचड़ में लथपथ सुतापा अपने क़दमों को सँभालते हुए नाव की ओर आगे बढ़ी और

शेखर से बोली "शेखर ? प्लीज़ कुछ करो, यहां जानवर....."

दिन की रौशनी में नाज़ुक से दिखने वाले इस सुंदर बन ने सांझ ढलते ढलते काला अभेद्य रूप धर लिया था। कीचड़ से पटे हुए किनारों पर "अधिपादप" जड़ें ख़ंजर सी उभरी पड़ी थीं, ज़रा सी भी चूक घातक हो सकती थी। उनके पांवों को कोई खतरा नहीं था क्योंकि उन्हें जंगल में जाने की कोई जल्दी नहीं थी बल्कि तीनों का ध्यान तो इस तरफ था कि जंगल के अंदर से बाहर क्या-क्या आ सकता है। पूरे भारत में पाए जाने वाले रॉयल बंगाल टाइगर्स की संख्या सुन्दर बन में सबसे ज़्यादा थी। ये ढलती शाम के शिकारी थे और यही उनका समय था। नाव पर बांस और कनात से बने एक छोटे से तम्बू के अंदर शेखर रहमान से बात करने गया और लगभग तुरंत वापस आ गया।

"न, रहमान कह रहा है कि अभी कुछ नहीं हो सकता, बस इंतज़ार करना पड़ेगा। "

नाव के पिछले हिस्से से सरसों के तेल की तीखी खुशबू के साथ कुछ तलने की आवाज़ आ रही थी। सुतापा की नज़रें अभी भी जंगल की ओर टिकी हुई थीं।

"रहमान रात का खाना तैयार कर रहा है। अरे हमें कुछ नहीं होगा, वी विल बी फाइन" शेखर तपाक से बोला। शाम की चुप्पी को अचानक उठी "खी - खी" की आवाज़ों के तोड़ा, दोनों चौंक कर उछल पड़े। "बन्दर हैं बाबू" रहमान तम्बू से बाहर झांकते हुए बोला। " भौजी आप इधर ऊपर की ओर आ जाओ, इधर आप सुरक्षित हैं" ऐसा कहते हुए उसने जल्दी से सुतापा की ओर लकड़ी का पटरा बढ़ा दिया जिससे वो नाव के ऊपर तुरंत चढ़ सके । उसकी तेज़ हरकत आवाज़ की संयमता से बिलकुल उलट थी।

"क्यों.. शेरों की तरह क्या यहां के पाटा बंदर भी आदमखोर हैं ?"

माहौल को हल्का करने के लिए पूछे गए इस सवाल का जैसे किसी पर कोई असर नहीं पड़ा।

"ऐसा नहीं है, इनके एक साथ चीखने की आवाज़ जंगल में किसी बड़े जानवर की हलचल का संकेत होती है। " ख़ैर छोड़ो बाबू ! भौजी पटरे पर थोड़ा संभल कर पैर रखना।" रहमान बोला। "रहमान के उतरे चेहरे में चिंता की लकीरें देखते ही शेखर की मुस्कान गायब हो गयी ।

बंदरों की चीख सुनते ही सुतापा चौंक कर उछल पड़ी थी । उसका गोटेदार फॉल मिट्टी में सन गया था। सुतापा ने अपने साड़ी की चुन्नटों को एक साथ पकड़ कर ऊपर उठाया। साड़ी के नीचे चमड़े की चप्पलों में "आलता" की किनारी से सजे उसके कोमल पैर और निखर गए थे। उसने एक दो लड़खड़ाते कदम लकड़ी के उस पतले से पटरे पे रखे और फिर वहीँ खड़ी रह गयी। उसके वज़न से पटरा तेज़ी से ऊपर नीचे डोलने लगा था।

और इधर रहमान भी जड़ सा हो गया था, वो न तो उन नाज़ुक पैरों से अपनी नज़रें हटा पा रहा था और न ही उसकी मदद को आगे बढ़ पा रहा था। उसने बीस सालों बाद आलता लगे पैर देखे थे क्यूंकि उस वक़्त उन्हें वो बचा नहीं सका था । उसकी पीली पड़ती बूढ़ी आँखों को किसी और नई नवेली दुल्हन की तस्वीर धुंधला रही थी। रहमान की राशिदा में नई नवेली दुल्हन का नाज़ और शोखी नहीं थी। रहमान से शादी के पहले उसनेजीवन में उसने कई तकलीफें झेली थीं। परिवार की आमदनी का ज़रिया छोटे से ज़मीन के टुकड़े पर होने वाली मुट्ठी भर धान की फसल तक ही सीमित था, हालाँकि इस कमाई को मैन्ग्रोव जंगलों से मिलने वाले शहद से थोड़ा सहारा ज़रूर था। ऐसी ही किसी यात्रा के दौरान जब राशिदा के छोटे भाई को शेर उठा ले गया तो उसके लिए भी जंगल के रास्ते बंद कर दिए गए। उसके बाद राशिदा की दुनिया बस धान के खेत की मेढ़ों की चहारदीवारी के बीच सिमट के रह गयी थी जिन्हे धारा के कटाव से बचने के लिए बनाया गया था । यही वजह थी कि उसका बचपन जंगल के कानून के

दायरे से अलग बीता था। और फिर अपनी शादी के लगभग साल भर बाद, उस दिन जब वो वापस नाव पे लौटी तो उसे ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि आज उसके साथ क्या घटने वाला है। रहमान की ज़िन्दगी उस दिन पूरी तरह से बदल गयी थी।

"अरे अरे वहीँ रुको !", शेखर चिल्लाया, उसने दोनों हाथ फैलाते हुए पटरा सुतापा की ओर बढ़ाया । रहमान जो अब तक अपने ही ख्यालों में डूबा था, वापस तम्बू की ओर लौट गया। पतीले पे चढ़ा "रुई माछेर झोल" अपने आप धीरे धीरे पक रहा था, रहमान ने उसका ढक्कन हटाया और उस सुगन्धित भाप में अपना सुकून वापस ढूंढने लगा।

"लोग कहते हैं कि ईमानदारी का ज़माना नहीं है, शायद यही सच है" सुतापा ने आधे घंटे से उस नाव पे पसरे सन्नाटे को तोड़ा। वरना अभी तक तो जंगल से रह रह के उठती उन चिड़ियों की चहचहाहट ही ठंडी हवा की सांय सांय से जूझ रही थी।

"मतलब?" शेखर ने चौंक कर पूछा | अब तक ढलती शाम और सुतापा की खूबसूरती के बीच ख्यालों में डूबा गोते लगा रहा था। खासकर कान के पीछे नागिन जैसी लहराती बालों की वो लट और हौले से झूलती सोने की वो बाली।

"अगर मैं तुमसे कुछ कहूँ तो तुम गुस्सा तो नहीं होगे?" सुतापा तुरंत बोली।

"अरे नहीं नहीं,पूछो" शेखर के उत्तर में सावधानी और जिज्ञासा दोनों थी।

शादी के तीन महीनों बाद भी शेखर की नई नवेली दुल्हन उसके लिए उतनी ही अन्जान थी जितनी शादी के पहले। घर वालों की ज़ोर - जबरदस्ती और परम्पराओं के चलते उन्होंने "अरेंज मैरिज" के आगे हथियार डाल दिए थे। शेखर को ये जानकर आश्चर्य हुआ कि ये अनुभव उतना बुरा भी नहीं था जितना उसने पहले सोचा था। हालांकि "अरेंज मैरिज" के बारे में उसके ख़यालात थोड़ा अलग ज़रूर थे। नब्बे के दशक का कोलकाता इस दिशा में पूरी तरह से बदल चुका था। कम से कम कुछ प्रगतिवादी परिवारों में तो ये बात सच थी । परिवारों द्वारा ढूंढे गए रिश्तों में युवक - युवतियों का पूरा दखल रहता था उन्हें बातचीत को आगे बढ़ाने या रिश्ते से इंकार करने का पूरा अधिकार था । लेकिन शेखर को ये तरीका फिर भी पसंद नहीं था। कहीं न कहीं इस वजह से उसे अपनी विफलता का हल्का एहसास भी था । खैर ज़िन्दगी की गाड़ी आगे बढ़ी, बूढ़े होते माँ बाप और खुद के अकेलेपन के चलते उसने शादी के लिए हाँ कर दी ।

लेकिन सुतापा के साथ ऐसा नहीं थाः उसे आज की तरह पहले भी कुछ ठीक महसूस नहीं हुआ था। वो कभी खुश नहीं दिखी थी , उनकी सीमित बातचीत दौरान भी वो उदास और कटी कटी सी रहती थी। इससे उनके रिश्ते में जो अभी ठीक से पनपा भी नहीं था, गांठ पड़ने लगी थी और एक दूसरे के भरोसे को जीतने का कोई रास्ता नहीं बचा था । लेकिन अब कुछ बदलने सा लगा था।

"मेरी ज़िन्दगी में तुमसे पहले कोई और भी था । "सुतापा शेखर की ओर मुड़ी जिससे उसकी नज़रों में नज़रे गाड़ के बात कर सके। शेखर उन घूरती नज़रों से बचने के लिए जंगल की ओर मुड़कर खड़ा हो गया।

शेखर के लिए ये नई बात नहीं थी। उनकी शादी तय होने के पहले ही आतिश ने एक दोस्त होने के नाते, सुतापा के बारे में जो भी अफवाहें सुनी थी. उसे बता दी थीं। उसे न तब कोई फर्क पड़ा था और न ही अब। अपने खानदान के दूसरे मर्दों की तरह वो ऐसे किसी भी दकियानूसी ख्यालों को नहीं मानता था जिसमे आदमी और औरत के लिए अलग-अलग नियम हों। उसने एक परंपरागत तरीके से शादी ज़रूर की थी लेकिन वो ऐसे किसी भी घटिया रिवाज़ों की पुरज़ोर मुखालफत करता था जिसमे महज़ शादी के पहले हुए संबंधों की वजह से औरत की पवित्रता पर सवाल उठाये जाएँ। वो बंगाली समाज के बहुत से

परिवारों में आज भी फैली ऐसी कुरीतियों से नफरत करता था।शायद ये नफ़रत उस पर इतनी हावी हो चुकी थी कि उसने उसी के आगे हथियार डाल दिए थे ।

"उसका नाम मनोज बागची था। " उसने सिर्फ़ इतना कहा और उसकी ओर पीठ करके खड़ा हो गया। थोड़ी देर रूककर उसने आगे की असलियत बयान की "अपने ब्राह्मण परिवार के जात - पात के ढोंग के आगे वो सर नहीं उठा सका था। "

एक तेज़ फड़फड़ाने की आवाज़ उनके बीच फैले सन्नाटे को चीरती हुई निकल गयी। एक चांदनी सा सफ़ेद बगुला दूर क्षितिज की ओर उड़ता चला जा रहा था ठीक उस ओर जहां अब सूरज डूब चुका था। शेखर की आँखें चुपचाप उसकी उड़ान को नाप रहीं थीं।

"तुम्हे पता था और फिर भी तुम शादी के लिए राज़ी हो गए ?" सुतापा ने धीमे से पूछा।

"हम सबका एक बीता हुआ कल होता है सुतापा, उसे पीछे छोड़ देना आसान नहीं होता। इसीलिए हमारी शादी के तीन महीने गुजरने के बाद भी मैं तुम्हारे करीब नहीं आया , इन बातों में वक़्त लगता है। " शेखर नाप तौल कर बोला। वो अभी भी उसकी ओर पीठ करके खड़ा हुआ था।

"तो फिर, वही घिसी पिटी कहानी, है न ?" सुतापा की आवाज़ में अब तेज़ी थी, नज़रों में वही पैनापन था। गुस्से में पोंछे आसुंओ के बाद उसकी आँखें चमक उठी थीं। सिर्फ़ इसलिए कि उसने अपने दिल की सुनी थी, वो न तो हार मानने वाली थी और न ही माफ़ी। "मैंने ये कभी भी नहीं सोचा एक हिपोक्रिट हो जहां आदमियों के लिए एक नियम और औरतों के लिए दूसरे। मेरा वो पहला प्यार, जो कि माना एक गलती थी, इसलिए मुझे तुमसे प्यार करने का कोई हक़ नहीं। ऐसा ही है, है ना ? " गुस्से में थरथराते हुए उसने झटके से शेखर की बांह पकड़ के हिलाई। वो शेखर को खुद से और ज़िन्दगी से रु-ब-रु करना चाहती थी। शेखर नाव के मुहाने पर खड़ा था, अचानक लगे इस झटके से उसका संतुलन बिगड़ गया। संभलने की कोशिश में उसने हाथ हिलाये और फिर नाव से नीचे गिरकर अँधेरे में गायब हो गया।

"मैं ठीक हूँ।" इससे पहले सुतापा की चीख निकलती, शेखर की आवाज़ आयी । रहमान भी भाग कर वहां आया और फिर दोनों नाव के नीचे झाँकने लगे।

"कहाँ हो तुम ? ओ माँ ये मैंने क्या कर दिया ? "

"मैं यहीं हूँ, ठीक तुम्हारी नाक के नीचे" शेखर हँसते हुए बोला। " मुझे नहीं पता था कि मैंने एक शेरनी से शादी की है , क्या गजब की ताक़त है !!"

जिस चट्टान पर नाव फंसी हुई थी, शेखर उससे लुढ़कता हुआ नीचे गिरा और पूरा मिट्टी में सन गया। उसकी हंसी सुनकर ही सुतापा उसे ढूंढ पायी थी। उसे सिर्फ़ शेखर की मुस्कुराती आँखें और चमकते दांत ही दिखाई दे रहे थे। नाव से हाथ भर की दूरी पर पड़े शेखर ने कुहनियों के सहारे ऊपर उठकर रहमान और सुतापा की ओर देखा। उसे देखते ही सुतापा खिलखिला पड़ी और फिर दुसरे ही पल चुप्पी साध ली। शेखर की वो हल्की से हंसी अब ठहाकों में तब्दील हो चुकी थी। जिसकी वजह शायद ऐसे अचानक गिरना और सुतापा को वापस पा लेने की ख़ुशी थी।

"अरे मेरी झाँसी की रानी, मुझे लगा कि तुम उस गधे बागची से अभी भी प्यार करती हो। इसीलिए मैंने तुमसे थोड़ी दूरी बनायीं हुई थी। इसकी वजह कोई समाज का दकियानूसी बंधन नहीं था। मैंने जिस घड़ी तुम्हे देखा था....." और कहते कहते शेखर अचानक रुक गया, अपने फ़िल्मी इज़हार से वो खुद थोड़ा संकुचा सा गया था। सुतापा की छलछलाई आँखें और दमकता चेहरा वो परत दर परत पढ़ चुका था। उसे आगे अब कुछ भी कहने की ज़रुरत नहीं

थी। "तो फिर तुम .....मतलब तुम और मैं .....? " सुतापा को विश्वास ही नहीं हो रहा था जबकि शेखर अब तक हामी में अपना सर भी हिला चुका था।

रहमान वापस तंबू की ओर लौट गया। माछेर झोल अब भी अपने आप पक रहा था, रहमान फिर करछी उठा कर बर्तन में इधर उधर घुमाने लगा। वो उन दोनों को कुछ पल और देना चाहता था , वो पल जो उनके बंधन को और मज़बूत करने वाले थे। "बाबू को तो नाव पर कभी भी उठाया जा सकता है , लेकिन ये खूबसूरत पल दोनों की ज़िन्दगी में फिर वापस नहीं आएंगे। " रहमान मन ही मन मुस्कुरा रहा था।

उसका ये सोचना बिलकुल गलत न होता, दोनों के बीच वक़्त शायद ठहर सा जाता अगर पास जंगल में चीतल का एक झुण्ड चीखना शुरू न करता तो। सफ़ेद पूँछ वाले हिरनों गोलपाता के झुरमुटों के बीच भागते आसानी देखा जा सकता था और जैसे ही उसका सर और कंधा बाहर आया ये साफ़ हो गया कि वहां एक शेर था। उँगलियों जैसी फैली हेतल की पत्तियां उसके शरीर पर पड़ी धारियों से बिलकुल मेल खा रहीं थीं। अब तक ये साफ़ हो चुका था कि शेर को चीतल में कोई दिलचस्पी नहीं थी। उसके कदम धीरे धीरे चांदनी में नहाई उस नाव की और बढ़ रहे थे।

"पूरी तरह मिटटी में सना शेखर वहीं जड़ सा हो गया था । शेर वहां से मुश्किल से १०० मीटर की दूरी पर था । शेखर की सिर्फ आँखें ही शेर की चाल के साथ हिल रहीं थीं। इधर नाव पर सुतापा अपने घुटनों पर बैठी दोनों हाथों को जोड़े आँख मूंदकर ये प्रार्थना कर रही थी कि किसी तरह ये अनहोनी टल जाये। रहमान सिर्फ़ उसकी घात लगाती चहल कदमी को देखे जा रहा था। नारंगी खाल में उन ताक़त वर पंजों से उसकी नज़र ही नहीं हट रही थी जो गीली मिट्टी में डूबते उठते नाव की ओर बढ़ रहे थे।

अचानक उसी समय अँधेरा और गहरा गया और शेखर की ओर झुकती उन निशाचर आँखों में हरी सी लकीर चमक उठी। ये देखते ही रहमान के अंदर बिजली सी कौंधी। उसके मन में एक अजीब सा ख्याल आया " बस और नहीं, राशिदा के बाद अब कोई और नहीं " उसने पलक झपकते ही पास पड़ी थाली और करछी उठाई और नाव के किनारे आकर ज़ोर ज़ोर से पीटने लगा। थाली पीटने के साथ साथ वो चिल्ला भी रहा था "हुर्रर्र हटट - हुर्रर्र हटट - हो हो !!!"

उसकी मछुआरे की आवाज़ जो अब तक विरह के गीत गा गा के पंचम सुर में हो गयी थी, और तेज़ी पकड़ रही थी। वो थाली पीटने के साथ साथ नाव पर अपने पैरों की धमक बढ़ाता जा रहा था। अब सुतापा ने भी अपनी आवाज़ उस शोर में मिला दी थी। शेर के कदम ठिठके, उसने कुछ पल के लिए उस शोर को सुना जो जो उसके कानों में तेज़ाब घोल रहा था।उसने जंगल में ऐसा शोर कभी नहीं सुना था। शेर अब पीछे हटने लगा। और फिर अपने पंजों से कानों को ऐंठता जंगल में वापस जाने लगा।

शेखर की ये पूरी कोशिश थी कि वो सांस भी ले तो आवाज़ न हो, थोड़ी सी भी हलचल लौटते शेर का ध्यान उसकी ओर वापस खींच सकती थी। इधर नाव पर खड़े रहमान और सुतापा अभी भी शोर मचाते जा रहे थे। ख़ामोश जंगल के मुहाने पर पहुच कर शेर मुड़ा, एक नज़र शेखर पर डाली और फिर अपनी पूँछ झटकता जंगल में गायब हो गया।

नाव के मुहाने पर बैठा शेखर सुतापा की बाँहों में बाहें डाले अँधेरे में क्षितिज की ओर देख रहा था । दोनों के बीच की सारी हिचकिचाहट और गलतफहमियां इस घटना के बाद एक झटके में

दूर हो गयीं थीं। अचानक तभी जंगल से चीतल के चीखने की आवाज़ आयी और ये साफ़ हो गया कि शेर अपनी दुनिया में वापस लौट चुका था। तब जा कर रहमान की जान में आयी और उसने करछी और थाली जो अब तक हाथ में पकड़े हुए थे, किनारे रख दिए।

जंगल विभाग की नाव आधी रात को उन तक पहुंची, तब तक उनकी नाव थोड़े से पानी में उतरा रही थी लेकिन डुम्बा चौरा की पकड़ से पूरी तरह छूटी नहीं थी।

"ये एक घंटे में निकल जाएगी", गश्ती दाल का अधिकारी बोला। "मिस्टर रे, आप और आपकी मिसेज़ को हमारे साथ आना होगा। इससे नाव हलकी हो जाएगी और शायद इसे बाहर निकलने में उतना समय न लगे । और वैसे भी गीले कपड़ों में यूँ फ़रवरी की रात बिताना कहाँ की समझदारी है? " उसने मुस्कुराते हुए बोला और दोनों नावों के बीच पटरे का पुल बना दिया ।

"लेकिन रहमान ? वो तो अकेला रह जाएगा, अगर शेर वापस आ गया तो ?" सुतापा की चिंता अभी ख़तम नहीं हुई थी। उन्होंने पिछले कुछ घंटे रशीदा की छोटी सी ज़िन्दगी की यादों के साये में बिताये थे। रहमान के संभाल के रखे यादों के खज़ाने को उन्होंने अभी भी तक सीने से लगाए रखा था। लेकिन रहमान में कुछ बदल सा गया था। अब जब भी उसकी नज़र जंगल की ओर पड़ती उसकी नज़रों में ख़ौफ़ नहीं होता था ।

"ना भौजी ना, आप बिल्कुल चिंता न करो। मुझे कुछ नहीं होगा। मुझसे वो अब ले भी क्या सकता है ? जो कुछ भी था सब तो दे दिया। ना, मुझे कुछ नहीं होगा। " रहमान की मुस्कराहट में सुकून और आशीर्वाद दोनों थे ।

दूर चांदनी की किरणें लहरों के साथ अठखेलियां करतीं चली जा रहीं थीं और इधर रहमान की नाव उठती - उतराती लहरों में डुम्बा चौरा से जूझ रही थी। जंगल हमेशा की तरह शांत और जीवन से सराबोर था।

कोलकाता में जन्म, कम्पनी सचिव की शिक्षा बैंगलोर (कर्नाटक) से पूरी की। पिछले १० वर्षों से मैं शिकागो में निवास, रेडियो पानी पूरी शिकागो, हिंदी क्लब ओफ़ इलिनॉय, महिला काव्य मंच, कौस्तुभ पत्रिका, गर्भनाल पत्रिका एवं अन्य कई मंचों में अपनी रचनाएं प्रस्तुत कर चुकी हैं।

ई-मेल - pritimishra82@gmail.com

प्रीती मिश्रा

"चलो हम हिन्दी अपनाएं"

चलिए हम आज कुछ कटु किंतु दु:खद तथ्यों के विषय में बातें करते हैं। आधुनिकता की दौड़ में आज कई देशों की भाषाओं को सीखना मानव जीवन की आवश्यकता बनती जा रही है और इसमें कोई बुराई नहीं समझती मैं क्यूँकि शायद समय की माँग ही यही है। इसी समय की माँग को अपनाते हुए लोग तेज गति से कामयाबी की सोपान चढ़ते हुए आगे निकलते जा रहे है पर गलती तो तब होती है जब लोग आगे बढ़ने की होड़ में अपनी राष्ट्र भाषा हिन्दी की अवहेलना करते हुए उसे भूलने लगते है। कुछ तो हिन्दी को अपनाना तो दूर उसे बोलने में भी शर्म का अनुभव करते है। अगर बीते समय में महादेवी वर्मा जी, सूर्यकांत त्रिपाठी जी, स्वामी विवेकानंद जी, मुंशी प्रेमचंद जी और इन्हीं की भाँति और भी कई हिन्दी के प्रेमी भी अपनी भाषा को लेकर यदि यही सोच रखते तो क्या हम इसकी महत्व को कभी समझ पाते? जानती हूँ कि नि-संदेह आप का उत्तर ना होगा। हिन्दी की जीवंतता को बनाए रखने के लिए आज हिन्दी प्रेमी कई तरह के हिन्दी पत्रिकाओं के माध्यम से, ऑनलाइन हिन्दी साहित्यिक कार्यक्रम या काव्यों के माध्यम से अपनी बातों को जन-जन तक पहुँचाने की कोशिश कर रहे है और कुछ हद तक सफलता भी प्राप्त कर रहे है। हमारे देश के भविष्य हमारे बच्चे अंग्रेज़ी तो बड़ी ही सरलता से सीख और बोल लेते है किंतु हिन्दी वो ना तो बोल पाते है ना ही समझ ही पाते है जिसके फलस्वरूप वो अपने परिवार के बुजुर्गों से यानी दादा- दादी, नाना- नानी संग आत्मीयता के साथ जुड़ नहीं पाते है क्यूँकि उन्हें अंग्रेज़ी समझ नहीं आती और बच्चों को हिन्दी। मेरी नज़र में भाषा एक बहुत बड़ी कारण है दूरी की। यदि मैं ये कहूँ की ये केवल एक भाषा नहीं बल्कि दिलों को जोड़े रखने का धागा भी है तो इसने कोई अतिशयोक्ति नहीं। अब माता पिता को ही आगे बढ़ कर खुद भी हिन्दी अपनानी होगी और बच्चों की रुचि भी हिन्दी के प्रति जगानी होगी। हिन्दी हमारी स्वाभिमान, पहचान और अभिमान की भाषा है किंतु अंग्रेज़ी के बाज़ार में ये गुम होती जा रही है पर अपनी इस धरोहर को बचाने के लिए ही प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस मनाया जाता है और ख़ुशी की अनुभूति भी होती है जब लोग बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते है, तब मन के किसी कोने में ये आशा जन्म लेती है कि हमारी हिन्दी की जीवंतता हमेशा बनी रहेगी। आजकल तो बच्चे इंटर्नेट के ज़रिए नई -नई चीजें सीखने लगे है तो क्यूँ ना हम इंटर्नेट के माध्यम से ही उन्हें हिन्दी के प्रति भी जागरुक करे अगर बच्चे जागरुक हो गए तो मुझे सत प्रतिशत विश्वास है कि हिन्दी कही गुम हो ही नहीं सकती है। हमारे बापू(महात्मा गांधी जी) की भी इच्छा थी कि हिन्दी भाषा राष्ट्र की भाषा हो तो क्यूँ ना हम सब उनकी इस इच्छा की तरफ़ एक साथ मिलकर एक सशक्त कदम बढ़ाए। कितने ही वेद, पुराण, साहित्य, भक्तिमय काव्य हिन्दी की देन है परंतु यदि हम अपनी भाषा से दूर जाएँगे तो इन सब रचनाओं से भी वंचित रह जाएँगे। हमारे संस्कृति और संस्कारों की पहचान ही हिन्दी से होती है। हिन्दी

का जन्म ही देवभाषा संस्कृत की देन है तो भला इसपे किसी भी भारतीय को गर्व कैसे ना हो। हमारे हिन्दी को किसी परिभाषा की आवश्यकता ही नहीं है क्यूँकि हमारे रहन सहन, वेशभूषा और व्यवहार ही परिभाषा है हमारी हिन्दी की। जो भी लोग हिन्दी को अपनाने में और बोलने में शर्म का अनुभव करते है उनसे मैं केवल इतना कहना चाहूँगी की इसे हीनता का नहीं बल्कि गौरव का प्रतीक समझिए। अंत में मैं सिर्फ़ इतना कहूँगी कि भारतीय होने के नाते ये हमारा कर्तव्य है कि हिन्दी की प्रचार और विस्तार के लिए एक जुट होकर आगे आए और शान से हिन्दी अपनाए क्यूँकि -

"चाहे सीख लो भाषा जितनी पर करो प्यार हिन्दी से अपनी,
वेद पुराण और साहित्य के मंजुल रचना से तुम्हें मिलाएगी,
सुर -कबीर -मीरा-तुलसी के भक्ति के दर्शन कराएगी"।

प्रमिला भार्गव

मैं नन्हा मुन्ना बच्चा हूँ

मैं नन्हा मुन्ना बच्चा हूँ
अन्दर बाहर से अच्छा हूँ
छोटा सा अजब सितारा हूँ
माँ पा का बहुत दुलारा हूँ
घर में सबको मैं प्यारा हूँ
प्राणायाम योग सीख कर मैं
भारत का मान बढ़ाऊँगा
मेहनत और परिश्रम से
भारत की शान बढ़ाऊँगा
मेहनत औरपरिश्रम से
भारत को स्वच्छ बनाऊँगा
काम गज़ब के कर के मैं,
नव भारत ऐक बनाऊँगा
काम अनोखे कर के मैं
भारत की पहचान बनाऊँगा
अपने उच्च विचारों से
भारत को उच्च बनाऊँगा
शालीन नेक व्यवहारों से
भारत शालीन बनाऊँगा
मैं नन्हा मुन्ना बच्चा हूँ
अन्दर बाहर से सच्चा हूँ
मैं नन्हा मुन्ना बच्चा हूँ।

फ़ोन करो माँ

दादू मेरे पास नहीं हैं
दादी माँ हैं हिन्दुस्तान
पापा करते घर से काम
नानी को तुम फ़ोन करो माँ
कह दो
जल्दी से तुम घर आ जाओ
मेरा सोना, राजा बेटा
मुझको तंग बहुत है करता
उसको आकर तुम समझाओ
मेरा कहना नहीं मानता
नानी जब फिर घर आयेगी
तब मैं नानी संग खेलुँगा
तंग न तुम को कभी करुँगा।
तंग न तुम को कभी करुँगा।

बर्फ़ गिरी है

पापा आओ
पापा मम्मा जल्दी आओ
देखो बाहर बर्फ़ गिरी है
पापा आओ
मम्मा आओ
मेरे दोस्तों को
आवाज़ लगाओ
ढेर सारी बर्फ़ गिरी है
इससे मिलकर हम खेलेंगे
बरफ उठा कर मज़ा करेंगे
एक दूसरे पर फेंकेंगे
टीले से हम सब फिसलेंगे
लोट पोट कर रोल करेंगे
मज़ा बर्फ़ का हम सब लेंगे
खूब बर्फ़ से हम खेलेंगे।

शब्द -जाल

क	र	त	ब	ता	र	ज	गा
ट	म	ट	म	र	घ	य	ल
ह	ह	ल	ड	ग	र	था	ल
ल	फ	ली	ट	म	ट	म	दी
खा	ना	ड	वा	का	ला	न	प
र	ग	क	म	ट	न	ज	क
खा	ना	ल	दा	म	र	द	चा
गा	ता	ल	क	न	ज	दी	क
च	म	गा	द	ड़	त	व	स

करतब, कटहल, काला, कमल, खाना, खाल, गाय, गाना, गाल, चमगादड़, चादर, टमटम, थाल, दीपक, नमक, नजदीक, दान

बूझो तो जानें

१. एक फूल है जिसका रंग काला, हमेशा सिर पर सुहाए। जब धूप हो तेज़ वो खिल जाता, लेकिन छाओ में वो मुरझाए।

२. जिसकी काली काली माँ, उसकी लाल लाल बच्चे। जिधर जाए माँ, पीछे पीछे जा उसके बच्चे।

३. बीच कटे तो कम हो जाता, अंत कटे तो कल बन जाता। लेखक के मैं आता काम, बताओ का है मेरा नाम।

४. अंत कटे तो सीता, मुख्य कटे तो मित्र, मध्य कटे तो खोपडी ,यह पहेली बड़ी विचित्र।

५. गोल हूँ लेकिन गेंद नहीं, पूँछ हैं लेकिन पशु नहीं, मेरा पूंछ पकड़कर बच्चे खेलें , फिर भी मेरे आंसू निकलते नहीं?

छाता , रेलगाड़ी , कलम , सियार , गुब्बारा

कला

जयपुरिया

भारत के खुशनुमा रंग, राजस्थान की रेत, अपनी मिट्टी की खुशबू और सवाई भाट के स्वर, इस कलाकृति के यही प्रेरणास्त्रोत हैं । ओढ़नी अनंत रेत में लहराती सूरज की तपिश की परिचायक है । आँखें बन्द करने पर आप उस पर पड़तीं खुशियों की किरणें दिखाई देतीं हैं, मटकी तपती दोपहर में प्यास बुझाने के लिए बेशकीमती जल से भरी हुई है, सारी इच्छाओं को पूरी करने के वादे के साथ वह आशा से भरपूर है । उसका स्त्री रूप शक्ति और पोषण का एक शक्तिशाली प्रतीक है।

संक्षिप्त परिचय

पीस अ हार्ट" की संस्थापिका रुचिका यादव जो स्वयं एक परिपक्व कलाकार हैं और पेंटिंग्स की विवध विधाओं में पारंगत हैं । भारत से चार्टर्ड एकाउंटेंट और अमेरिका में विभिन्न फाईनेंशिअल कंपनियों में वर्षों का अनुभव ले चुकीं रुचिका एक पेंटर के साथ साथ एक मंझी हुई रंगकर्मी और सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं, और वर्तमान में विंचेस्टर, मैसाच्यूसेट्स में अपने परिवार के साथ रहतीं हैं

रुचिका यादव

मनोरंजन

एक रोमांचक थ्रिलर है "ये काली काली आंखें"

"ये काली काली आँखें" - वेब सिरीज़ *(हिंदी)*
क्रिएटर - सिद्धार्थ सेन गुप्ता
कलाकार - ताहिर राज भसीन, श्वेता त्रिपाठी शर्मा, आँचल सिंह, सौरभ शुक्ल, ब्रिजेन्द्र काला
कहाँ देखे - नेटफ्लिक्स

सौरभ शुक्ल, श्वेता त्रिपाठी और बृजेन्द्र काला कुछ ऐसे नाम हैं जो रीयलिस्टिक सिनेमा की ओर बढ़ते हिंदी फिल्म जगत के कुछ बेहतरीन प्रोडक्शंस के साथ जोड़कर देखे जा सकते हैं। नेटफ़्लिक्स पर जब "ये काली-काली आँखें" का ट्रेलर पिछले माह आया तो एक बात तो मैंने तय कर ली थी कि इसे मैं देखूँगा ज़रूर लेकिन मैं ये नहीं जानता था कि देखने के बाद इसके दूसरे सीज़न की भूख और प्रबल हो जाएगी । जब कभी भी आप परदे पर उतरती किसी ऐसी कहानी को देखते हैं जिसमे जिस जगह जिस काल की कहानी कही जा रही है वहां उस काल उस जगह के पहनावे और बोली के साथ पूरी ईमानदारी बरती गयी है तो उस कहानी से आपके अंत तक जुड़े रहने की संभावनाएं और प्रबल हो जातीं हैं। अगर आप अच्छे अभिनय और एक कसे हुए कथानक के प्रशंसक हैं तो इस वीकेंड ये वेब सिरीज़ "बिंज वाचिंग" की बिल्कुल उपयुक्त रेसिपी है।

- मनीष श्रीवास्तव, बॉस्टन

अंततः

आपका स्वास्थ्य प्रतिभा फड़के गुप्ता के साथ

प्रतिभा फड़के गुप्ता, पी एच डी ,

सर्दियों का मौसम और आपका स्वास्थ्य

अपने आप को फिट रखने के लिए बैलेंस डाइट और व्यायाम करना बहुत जरूरी होता है सही शब्दों में कहा जाए तो यदि हम रोज एक नियमित रूप से भोजन पानी का सेवन करें और व्यायाम करें तो उसका लाभ शरीर पर अच्छा होगा. सर्दियों के मौसम में अक्सर हम आलस्य के मारे कभी-कभी अपने घरों से बाहर नहीं निकलते लेकिन फिर भी वर्कआउट भी जरूरी भी हो जाता है क्योंकि घर बैठे बैठे हमारे शरीर का मेटाबॉलिज्म कम हो जाता है और हमारे शरीर की गतिविधियां कमजोर पड़ जाती हैं,वजन भी बढ़ जाता है और कभी-कभी कुछ और भी बीमारियां हमें परेशान कर सकती हैं. सर्दी के मौसम में ठंड की वजह से हम सब लोग व्यायाम करने का ध्यान नहीं रखते और ऐसा भी होता है कि हम यह भूल जाते हैं कि व्यायाम करने से ही हमारे शरीर में ऊर्जा बनी रहती है.

सबसे अच्छा एक उपाय यह है कि यदि हम नियमित रूप से सुबह उठकर अपने घरों में एक एक जगह पर खड़े होकर योग अभ्यास करें .यदि आपके घर के आसपास कोई मॉल हो तो वहां पर भी जा सकते हैं एक मॉल का चक्कर भी लगा सकते हैं यदि यह संभव नहीं है तो आप अपने घर में एक अच्छा सा म्यूजिक वीडियो लगाकर उस पर अपनी मनपसंद ढंग से नृत्य का आनंद ले सकते हैं और एक तरह से आपके शरीर में एक अच्छी चेतना जागृत हो सकती है.

आप यह काम कर सकते हैं

एक नियमित समय तय करें कि आपको कब व्यायाम करना है सुबह सुबह व्यायाम करने से शक्ति काफी अच्छी होती है और और पूरे दिन भर आपके शरीर में शुद्ध ऑक्सीजन जिनकी वजह से रक्त संचार होगा, यह जरूरी नहीं है कि आपको काफी समय तक व्यायाम करना है. यदि आप दिन भर में ३० मिनट तक किसी भी व्यायाम को अपना सकते हैं तो वह भी बहुत अच्छा है .यदि आप ऑफिस में काम करते हैं तो एलिवेटर लेने की बजाय आप सीढ़ियों से ऊपर नीचे जा सकते हैं, अपनी कार को अपने ऑफिस से थोड़ी दूर पार्क करके पैदल ऑफिस की तरफ जा सकते हैं. यदि आप ऑफिस में काफी देर तक बैठते हैं तो आप अपनी ऑफिस के टेबल को थोड़ा ऊंचा रखें ताकि आप खड़े होकर ऑफिस में काम कर सके.व्यायाम करने से आप का पाचन तंत्र अच्छी तरह से काम करता है और कई तरह की समस्याएं जैसे गैस और ब्लोटिंग से छुटकारा मिल सकता है. व्यायाम करने से मूड भी फ्रेश होता है शरीर में रक्त संचालन अच्छा होता है और हमारी तंत्रिका तंत्र दिए उत्तेजित हो जाते हैं और हार्मोन का संतुलन अच्छा रहता है भोजन सही समय पर करना चाहिए . आवश्यक है कि अच्छे भोजन के साथ साथ व्यायाम का भी पालन करें

व्यायाम करने से आप का पाचन तंत्र अच्छी तरह से काम करता है और कई तरह की समस्याएं जैसे गैस और ब्लोटिंग से छुटकारा मिल सकता है. व्यायाम करने से मूड भी फ्रेश होता है शरीर में रक्त संचालन अच्छा होता है और हमारी तंत्रिका तंत्र दिए उत्तेजित हो जाते हैं और हार्मोन का संतुलन अच्छा रहता है भोजन सही समय पर करना चाहिए . आवश्यक है कि अच्छे भोजन के साथ साथ व्यायाम का भी पालन करें
हमारे अगले एपिसोड में हम आपको बताएंगे भोजन कैसे खाएं और कब खाएं और एक अच्छी रेसिपी आपको मिलेगी

यदि आपको डायबिटीज है तो आप चने का आटा ज्वार का आटा और कई सारी दालों को जैसे मूंग मसूर चना उरद तुवर दाल इत्यादि का पाउडर बनाकर रख लें

फास्ट एक्सप्रेस पौष्टिक पराठा डायबिटीज में उपयोगी

.एक कप चने का आटा,
एक कप ज्वार का आटा
एक कप किसी भी दाल का पाउडर, मिलाकर रख लें .
1 cup मिक्स सब्जियां उबली हुई
1 tsp हल्दी
1/4 tsp अजवाइन
स्वादानुसार नमक
1 tsp गरम मसाला
1 tsp कसूरी मेथी
ऊपर लिखित सभी चीजों को अच्छी तरह मिलाकर आटा तैयार कर ले और फिर छोटी-छोटी लोई बनाकर बेलन से बेलकर पराठे तैयार कर ले. इस पराठे को गरम गरम चाय के साथ सेवन करें
हमें जरूर लिखें कि आपको रेसिपी कैसे लगी . अगली बार आपके लिए एक और नए व्यंजन के साथ मुलाकात होगी.

- आपकी प्रतिभा

हिंदी क्लब ऑफ़ इलिनॉय द्वारा आयोजित विश्व हिंदी दिवस - २०२२

हिंदी क्लब ओफ़ इलिनॉय के तत्वावधान मे दिनांक १५ जनवरी,शनिवार को विश्व हिंदी दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत देश-विदेश से जुड़े साहित्यकारों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार पर अपने विचार व्यक्त किए।कार्यक्रम का आरंभ शिखा मेहता द्वारा गणेश वंदना से किया गया।कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि शिकागो कौंसलाध्यक्ष श्री अमित कुमार जी ने क्लब द्वारा जारी की गयी मासिक पत्रिका "दृष्टि" के प्रथम अंक का अनावरण किया एवं हिंदी क्लब के कार्यों की सराहना की।पत्रिका के संपादक मनीष जी श्रीवास्तव ने पत्रिका की पृष्ठभूमि और उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी।कार्यक्रम की सह-संचालक डॉ प्रतिभा फड़के ने प्रकृति पर अपनी सुंदर रचना प्रस्तुत करने के पश्चात चेन्नई से जुड़ीं कुमुद वार्ष्णेय को आमंत्रीत किया। कुमुद जी ने बताया कि किस तरह उनके परिवार की तीन पीढ़ियाँ हिंदी के सेवा में संलग्न हैं।कार्यक्रम की अगली वक्ता प्रतिभा शर्मा जी ने विदेश में बसे हिंदी प्रेमियों की प्रशंसा के साथ अपनी रचना "स्तंभ" से सबका मन मोह लिया।

क्लब की अध्यक्षा गुरबचन कौर नीलम ने कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि श्री अशोक लव जी का स्वागत किया। अशोक लव जी ने हिंदी क्लब के द्वारा किए जाने वाले साहित्यिक कार्यों की सराहना की एवं विद्या नाहर जी को हिंदी प्रेमी सम्मान से सम्मानित किया। साहित्यिक पत्रिका के संपादक श्री संजीव कुमार जी ने हिंदी को किस तरह से बढ़ावा दिया जाए इस पर अपने सुझाव व्यक्त किए। कार्यक्रम की अगली वक्ता मधु खरे जी ने अपनी कविता "हिंदी निहित है" से ये बताया की हिंदी जन-जन की भाषा है। कार्यक्रम की सह-संचालिका स्रजनि पटल की संस्थापिका स्वेता सिन्हा जी ने अपने पटल द्वारा देश-विदेश में किए जाने वाली अनगिनत साहित्यिक कार्यों के बारे में जानकारी देते हुए अपनी कविता "हिंदी भाषा मेरा

अभिमान" से अपने हिंदी प्रेम से सबको अभीभूत किया। कार्यक्रम की अगली वक्ता जर्मनी से जुड़ीं स्रजनि की सह-संस्थापिका डॉ शिप्रा शिल्पी ने कहा की हिंदी को जन से पहले मन की भाषा बनाना ज़रूरी है। उन्होंने बताया कि वो किस तरह ईंटरनैशनल लेंगवेज क्लब के माध्यम से जर्मन भाषियों तक हिंदी पहुँचा रही हैं। तंजानिया से जुड़ी ललिता माथुर चौहान ने बताया कि वे किस तरह अफ़्रीका में हिंदी का परचम लहराने का कार्य कर रही हैं।दोहा,कतर से जुड़ीं मोनी कोईराला ने अपनी संस्था "शेयर योर ह्यूमानिटी" एवं बच्चों की संस्था" शेयर योर टैलेंट" के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम की सह-संचालिका प्रमिला भार्गव जी ने सुंदर शब्दों से सजी अपनी कविता "ये मेरा एक सपना है" के साथ अगले विशिष्ट अतिथि श्री श्याम त्रिपाठी को आमंत्रित किया। त्रिपाठी जी ने अपनी पत्रिका " हिंदी चेतना" के जन्म की प्रेरणास्पद कहानी साझा की। कार्यक्रम के अंतिम पड़ाव में हिंदी क्लब की अध्यक्षा गुरबचन कौर नीलम जी ने सब अतिथियों का आभार माना एवं सभी को गर्व से हिंदी बोलने की लिए प्रेरित किया।

- शिखा मेहता

R
Regal Jewels
22KT GOLD 24KT GOLD
DIAMONDS
2625 W. DEVON AVE. CHICAGO, IL 60659
PH: 773-262-4377
WWW.REGALJEWELS.COM

'It's not just what you do, 'it's who you do it for"

I'm proud to help PROTECT the lives of families all over the nation.

New York Life Insurance Company
CA Insurance License # 0C03808
AR Insurance License # 8251

NEW YORK LIFE

CELEBRATING 25 years OF EXCELLENCE
1995 -2020

SUNIL SHAH
(AGENT)

847 517 8640

870 E Higgins Rd, Suite # 138C
Schaumburg, IL 60007